विद्युत दर्पण

पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका

अंक -3 अप्रैल 2007

सम्पादकीय

भारतीय समाज की एक सनातन मान्यता है कि हमें मनसा, वाचा कर्मणा शुद्ध या पवित्र होना चाहिए । अर्थात, सर्वप्रथम हम हमेशा पवित्र ही विचार रखें, जैसे विचार रखें वैसी ही हमारी बोली भाषा हो और जैसे हमारे विचार और बोली भाषा हो, हमारे कर्म भी वैसे ही हों । अक्सर कथनी और करनी में अन्तर न रखने का आग्रह किया जाता है । उसका अन्तिम ध्येय भी यही है कि हम जैसी बातें करें, हमारा आचरण, हमारे कर्म भी वैसे ही होने चाहिए ।

हम सभी सरकारी कर्मचारी हैं, हम जो कुछ अपने-अपने कार्यालयों में करते हैं उसका लाभ, किसी न किसी रूप में देश के प्रत्येक नागरिक को मिलता है । सरकारी कर्मचारी होने के साथ-साथ हम अपने देश के जिम्मेदार और जागरूक नागरिक भी हैं । देश के सरकारी तंत्र द्वारा किए गए कर्म का न्यूनाधिक प्रभाव, नागरिक होने के नाते हम पर भी पड़ता है ।

उदाहरण के लिए रेल की आरक्षण खिड़की पर आरक्षण लिपिक यदि निर्धारित समय से कुछ मिनट भी विलम्ब से काम आरम्भ करता है तो हम इस बात को लेकर बेचैन हो जाते हैं कि इस विलम्ब के कारण अब हमें अपेक्षित आरक्षण मिलेगा भी या नहीं । अन्य खिड़कियों पर आरक्षण समय से आरम्भ हो जाने के कारण कहीं आरक्षित स्थान समाप्त तो नहीं हो जाएंगे । यहाँ हम रेल आरक्षण लिपिक से समय पर अपना काम आरम्भ कर देने की अपेक्षा करते हैं । ठीक इसी प्रकार अस्पताल और अन्य क्षेत्रों की बात है । हम अपेक्षा करते हैं कि वहाँ भी प्रत्येक कार्य समय से आरम्भ हो जाए । हम सरकारी तंत्र का महत्वपूर्ण अंग हैं और हम से भी हमारा देश- समाज अपना काम समय से करने की अपेक्षा करता है । यह सोचना और कहना गलत न होगा कि इस प्रकार की अपेक्षा हम स्वयं से भी करते हैं । अब यह आत्म निरीक्षण का विषय है कि हम अपनी अपेक्षा पर कितने खरे उतरते हैं ।

हाल ही में हमारे कार्यालय को राजभाषा हिन्दी के अधिक से अधिक उपयोग करने और राजभाषा नीति के विभिन्न तत्वों के उत्कृष्ट अनुपालन के लिए पश्चिमी क्षेत्र स्थित केन्द्रीय कार्यालयों का वर्ष 2005-06 का प्रथम पुरस्कार मिला । यह इस बात का प्रतीक है कि हम सबने पूरी निष्ठा, परिश्रम और समर्पण भाव से राजभाषा नीति के विभिन्न तत्वों का सम्मान किया ।

विद्युत दर्पण की ओर से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई और इस गौरवशाली परम्परा को भविष्य में भी जारी रखने का आह्वान ।

प्रवीण भाई पटेल
सदस्य सचिव

केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव गावित 13 फरवरी 2007 को जयपुर में पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति के सदस्य सचिव प्रभारी श्री मनजीत सिंघ को वर्ष 2005-06 के लिए राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिन्दी में किए गए श्रेष्ठतम कार्य निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

वर्जनाओं से थोड़ी सी छूट

वर्जनाओं से थोड़ी सी छूट
कब अति में बदल जाती है
संयम और अनुशासन की दृढ़ता
कब अधोगति में बदल जाती है
कुछ पता नहीं लगता ।

छूटती जाती हैं लगामें एक-एक करके
और मनुष्य रह जाता है हाथ मलता ।

भली लगती है फिसलन शुरू-शुरू में
भला लगता है थोड़ी दूर लुड़कना,
सतर्क, सचेत, नीरस, मंथर गति को छोड़
यूं ही अनियंत्रित बहकना ।।

न जाने कब तक जीवन की गाड़ी
अनियंत्रित दौड़े चली जाती है,
हर वर्जना, बंधन, बाधा तोड़े चली जाती है ।
मोड़ने से मुड़ती नहीं, रोकने से रूकती नहीं ।
समा जाती है नियति के गाल में ।

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण,
एफ-3, एमआईडीसी क्षेत्र, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई 400 093

तब रह जाता है शेष
भीषण अग्निकांड के बाद बचा
राख-सा, निस्सार, निरर्थक,
जीवन, नि:शेष ।।

लक्ष्मण गुप्ता
हिन्दी अधिकारी

पक्षेविसमिति में राजभाषा हिन्दी

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति जो एक वर्ष पहले तक पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत बोर्ड के नाम से प्रसिद्ध था, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का एक अग्रणी अधीनस्थ कार्यालय है ।

अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में इस कार्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति की है । आरम्भ में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन, हिन्दी शिक्षण योजना के माध्यम से अपेक्षित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान दिलवाया गया, फार्मों, लिफाफों, पत्रशीर्ष, रबड़ की मोहरों तथा अन्य स्टेशनरी वस्तुओं को द्विभाषी करवाया गया एवं राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का 100% पालन सुनिश्चित करवाया गया । समय-समय पर हिन्दी अभ्यासिकाओं (कार्यशाला) का आयोजन किया गया । मुख्यालय के बाहर आयोजित राजभाषा सम्मेलनों और हिन्दी कार्यशालाओं का भी लाभ लिया गया । राजभाषा नीति के अनुपालन में प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए तिमाही प्रगति रिपोर्टों और राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में इनकी समीक्षा ने अक्सर आत्मविश्लेषण के अवसर प्रदान किए । हिन्दी अधिकारी एवं हिन्दी अनुवादक के साथ-साथ सदस्य सचिव तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को व्यक्तिगत रूप से प्रेरित प्रोत्साहित करने ने सोने पे सुहागे का काम किया ।

1988 के आसपास राजभाषा विभाग की ओर से लागू मूल-टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना और हिन्दी में डिक्टेशन देना संबंधी प्रोत्साहन योजना ने पक्षेविबोर्ड / पक्षेविसमिति में राजभाषा के प्रयोग के एक नए युग का श्रीगणेश किया । अपने काम की प्रकृति के कारण कुछ ऐसे अधिकारी / कर्मचारी भी थे जिन्हें अंग्रेजी में भी वर्ष भर में 20,000 शब्द (मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना की न्यूनतम शब्द सीमा) लिखने के अवसर प्राप्त नहीं थे । उनके लिए कार्यालय की ओर से लघु प्रोत्साहन योजना लागू की गई जिसका लाभ लगभग प्रत्येक अधिकारी / कर्मचारी तक पहुँचाने का प्रयास किया गया । इसी बीच टाइप राइटर की जगह कम्प्यूटर आ गए । यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन था । अलग-अलग प्रकार के अलग-अलग आकार के टाइप-अक्षरों का उपयोग । टाइप राइटर का भारी भरकम लोहा कूटने के स्थान पर रेश्मी स्पर्श से काम करने वाला कम्प्यूटर आ गया । इस पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी काम होने लगा । यथासम्भव सरल हिन्दी सॉफ्टवेयर उपलब्ध करवाए गए जिनमें एएलपी (सी डैक), आकृति और सुशा (फांट) की उल्लेखनीय भूमिका रही । इस अत्यधिक आधुनिक उपकरण का हिन्दी में उपयोग व्यापक करने के लिए कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने संबंधी योजना लागू की गई । पिछले 3-4 वर्षों में इन प्रोत्साहन योजनाओं का प्रभाव दिखाई देने लगा । लेखा अनुभाग और प्रशासन अनुभाग का प्रत्येक कर्मचारी हिन्दी में अब औसतन 100% काम करता है । फाइलों पर टिप्पणी हाथ से लिखते हैं तो पत्रादि कम्प्यूटर पर हिन्दी में तैयार किए जाते हैं । वेतन बिल और वेतन पर्चियाँ द्विभाषी बनते हैं । हिन्दी भाषा और टंकण एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण भी 100% हो चुका है । समय-समय पर कार्यशालाएँ की जाती हैं । हिन्दी पखवाड़े और हिन्दी दिवस से संबंधित प्रतियोगिताओं में लगभग सभी अधिकारी - कर्मचारी सोत्साह भाग लेते हैं ।

तकनीकी क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी ने उल्लेखनीय प्रगति की है । विभिन्न रिपोर्टों के मुख पत्रों के साथ-साथ उनके फार्मेट भी द्विभाषी उपयोग किए जाते हैं । विद्युत दर्पण नामक गृह पत्रिका का प्रकाशन पुन: आरम्भ किया गया है । शायद इस सब का ही यह सुखद फल है कि इस कार्यालय को पश्चिमी क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यालयों का वर्ष 2003-04 के लिए द्वितीय तथा वर्ष 2004-05 और वर्ष 2005-06 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ये पुरस्कार प्रोत्साहन और पड़ाव हैं । पुरस्कार स्वरूप प्राप्त इस सम्मान में पक्षेविसमिति का प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी भागीदार है । अत: पक्षेविसमिति के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का इस अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन । मगर ये पुरस्कार हमारे पड़ाव हैं, ऊर्जा और स्फूर्तिदायक पड़ाव, लक्ष्य या सीमा नहीं । हमारा लक्ष्य पूर्णता और निरन्तर उत्कृष्टता है । जिस प्रकार आकाश की कोई सीमा नहीं होती, हमारे मार्ग की भी कोई सीमा कोई अन्त नहीं है, निरन्तर आगे और ऊँचे से ऊँचा बढ़ते जाना ही हमारा कर्म है, धर्म है ।

पक्षेविसमिति वृत पत्र

वर्ष 2007 पक्षेविसमिति के लिए अनेक शुभ समाचार लेकर आया जैसे:

1. श्री विनोद कुमार गुप्ता, सहायक निदेशक श्रे. I ने पदोन्नति के फलस्वरूप 4.1.2007 को कार्यपालक अभियंता के पद का कार्यभार ग्रहण किया । उन्हें प्रचालन मंडल में कार्य-भार दिया गया है ।
2. श्री दयानन्द सिंह, सहायक निदेशक श्रे.I ने भी पदोन्नति के फलस्वरूप 9.2.2007 को कार्यपालक अभियंता का पदभार ग्रहण किया। श्री दयानन्द सिंह को वाणिज्य मंडल में संभाग-II का पदभार सौंपा गया है। इन दोनों को हार्दिक बधाई।
3. श्री लक्ष्मीकांत सिंह राठौर, सहायक निदेशक ने 28.02.2007 को पक्षेविसमिति, केविप्रा में सहायक निदेशक श्रे.I के पद पर कार्यभार ग्रहण किया । श्री लक्ष्मीकांत सिंह राठौर का पक्षेविसमिति में हार्दिक स्वागत है ।
4. ग्रिड प्रचालन में ''प्रौद्योगिकी सुधार कार्यक्रम'' के अन्तर्गत इस कार्यालय के श्री प्रवीण भाई पटेल, सदस्य सचिव एवं श्री सत्यनारायण, कार्यपालक अभियंता विशेष प्रशिक्षण हेतु 10.02.2007 से 18.03.2007 तक कनाडा, यूएसए, यूके, नार्वे, बेल्जियम और फ्रांस के प्रतिनियुक्ति दौरे पर गए थे । इनके बाद श्री एस.जी.टेनपे, अधीक्षण अभियंता के विदेशी प्रशिक्षण हेतु प्रतिनियुक्ति दौरे पर 17 मार्च 2007 को प्रस्थान किया। विदेश दौरे में सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।
5. पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केविप्रा, मुंबई के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी के अधिक से अधिक अनुप्रयोग को एक बार पुन: मान्यता प्रदान करते हुए राजभाषा विभाग, भारत सरकार के प्रभारी गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव गावित ने 13 फरवरी 2007 को जयपुर में आयोजित समारोह में पश्चिम क्षेत्र (केन्द्रीय कार्या.) का प्रथम पुरस्कार (शील्ड) प्रदान किया ।